208 р
761
М

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1271/10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 761

٩ب / 2011

शहीद आज़ाद

गत २७ फरवरी को प्रयाग में वीर-गति प्राप्त हुए श्रीचन्द्रशेखर 'आज़ाद' का शव-चित्र।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 761
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

891.433
Sh33Sh

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
8 - AUG. 1931
DEPARTMENT

शहीद आज़ाद

(स्मृति-गान)

कहा किसी ने बढ़ कर, आकर, ज़ोर से,
"ख़ून हो गया! तुम्हें नहीं है ज्ञात क्या?
यहीं पास में, इसी 'एल्फ्रेड पार्क' में
एक तरुण ने द्वन्द्व अनेकों से किया,
चलीं गोलियाँ इधर, उधर भी गोलियाँ,
क्षत विक्षत दोनों ही दलवाले हुये,
चोटें आईं, रक्त बहा, पर अन्त में
एकाकी असहाय स्वयं ही वह तरुण
अपने ही को मार धरा पर सो गया!"

× × × ×

तरुण, तुम्हें हम कहाँ देख पाये रंग
स्वतन्त्रता-संगर के पावन रक्त से,
जब तुम पर तरु बरसाते थे फूल औ'
शौर्य तुम्हारा वैरीगण थे गा रहे।
कहाँ हमारा भाग्य? हमारा पुण्य वह
जो लेजाता खींच तुम्हारे चरण तक!
वीर, तुम्हारे दर्शन क्यों मिलते हमें,
हम तो सब हैं भीरु, हमें अधिकार क्या?
सुना, "तुम्हीं नामी बाग़ी 'आज़ाद' थे।"

× × × ×

आज़ादी की आग सुलगती ही रही
बचपन ही से वीर, तुम्हारे हृदय में,
इतनी सुलगी, इतनी सुलगी आग वह
बने 'क्रान्तिकारी' दल के तुम सैन्यपति,
उसी आग में निशि दिन तुम जलते रहे
और अन्त में उसी आग में मिट गये !
आज़ादी के सच्चे प्रेमी थे तुम्हीं,
आज़ादी से मिले गले से एक हो
जैसे दीपक से मिल जाता है शलभ !

× × × × ×

शहीद आज़ाद

कहा कहाँ पर आज़ादी की चाह यह
तुम्हें ले गई, औ' तुम पागल-से फिरे;
कितनी भोगी तुम ने निशि दिन यन्त्रणा
तुम्हीं जानते या अदृष्ट ही जानता।
जन्मभूमि के आँसू में वैभव बहा,
तुम आजीवन वैरागी बन कर रहे;
और अन्त में हृदय-रक्त के रंग से
मातृभूमि का अंचल तुमने रँग दिया।
देश-प्रेम के तुम ज्वलन्त आख्यान हो !!

× × × ×

कैसे विस्मृत होंगी वे घड़ियाँ इमें
बना तुम्हारा शैशव जब साहस प्रबल
'गांधी की जय' 'वन्दे' की आवाज़ पर
बेतों की थी मार तुम्हारे गात में,
किन्तु, न टूटा राग तुम्हारा, बेत तो
टूटे कितने ही लग लग तन वज्र-से;
ऐसे जननी के गायक तुम एक थे!
उस अमानुषिक उत्पीड़न ही ने किया
सृजन तुम्हारे क्रान्तिपूर्ण अवतार का।

× × × ×

तुम सदैव आज़ाद रहे आज़ाद ही
विश्व-शक्ति परतंत्र न तुमको कर सकी;
आहत करने चले, निहत हो वे स्वयं
लौटे, छाया तक न तुम्हारी छू सके,
रहते हैं परतंत्र कापुरुष भीरु ही,
वीर सदा स्वच्छन्द विचरते सिंह-से।
पराधीन जीवन से सुन्दर मृत्यु है,
इसीलिये तो बन्दी बनने के प्रथम
अमर श्वास ले ली तुमने रणधीर हे!

× × × ×

याञ्चा में हम कर फैलाये ही रहे,
किन्तु, तुम्हारी देह नहीं हमको मिली !
वीर, तुम्हारी 'पुण्य-देह' को इस तरह
फूँक दिया जैसे हो कोई पातकी !
कितनी निर्दयता है? कितनी क्रूरता ?
मृत्यु समय में यह छलना, अन्याय वह !!
पैशाचिक अभिलाषा कहलाती यही
'क्षत पर क्षण क्षण लवण छिड़कता ही रहे,
जितना वह तड़पे, उतना यह हो सुखी !'

× × × × ×

शहीद आज़ाद

भस्म हमारी हुईं लालसायें मधुर
हाय ! तुम्हारी उस अर्थी के साथ ही !
तुम्हें सजा कंधों पर गाते याद में
मतवाले हम गीत तुम्हारी कीर्त्ति के
निकल न पाये राज-पथों पर झूमते
देने को तुमको 'गंगा' की गोद में !
अन्तिम बेला तुम्हें लगा कर कण्ठ से
जी भर रो लेते मिट जाती साध यह,
रोयें कैसे ? रोना भी अपराध है !

× × × × ×

विश्व तुम्हारे तन को कर दे नष्ट, पर,
कीर्त्ति तुम्हारी नष्ट न हो सकती कभी;
भारत के इतिहास-पृष्ठ में अमर तुम
अंकित होगे स्वर्णाक्षर से वीरवर,
स्वतंत्रता के रण का होगा लेख जब।
भारत-माता के बंधन के तोड़ने
वाले तुम भी एक बहादुर पुत्र हो।
शीश-सुमन धर दिया पदों में भेंट-सी
होगा कौन कृतघ्न न पूजेगा तुम्हें?

× × × ×

शहीद आज़ाद

ध्येय हमारा और तुम्हारा एक था,
पथ में थी भिन्नता, बात थी दूसरी;
मातृभूमि की स्वतंत्रता ही के लिये
वीर, तुम्हारा वीरोचित बलिदान था!
लड़ने में रण में समक्ष हो शत्रु के
कितना गौरव है? कितना अभिमान है?
सोजाना रणशैया में लड़ते हुए
जीवन है, जागृति, अनन्त सौभाग्य है!
फिर, स्वदेश के लिये, और भी श्रेष्ठ है!

× × × ×

कह सकता है कौन? हम इसी मार्ग से
मुक्त कर सकेंगे 'माँ' को ज़ंजीर से।
कैसे हम आज़ाद बनेंगे और कब?
यह भविष्य ही बतला सकता वस्तुतः।
हम में भी तो प्रतिहिंसा की आग है,
किन्तु, 'अहिंसा' के प्रण में आबद्ध हैं,
निर्बल हैं, निःशस्त्र, दीन, असहाय हैं,
नहीं चुका देते कैसे इस ख़ून का
लेते हैं प्रतिशोध शूर भी शौर्य्य से!

× × × ×

किन्तु, रक्त के सागर में नित डूब, तिर,
मानवता के प्राण विकल हैं हो गये;
जो पहले ही विकल, उसे व्याकुल करें,
इसमें क्या है लाभ? कौन आनन्द है?
जितनी भी फैली अशान्ति है विश्व में
उसके कारण केवल ये ही शस्त्र हैं!
उन शस्त्रों ही को लेकर हम और क्यों
रक्त बहावें रक्तमयी इस भूमि पर?
इसीलिये तो आज 'अहिंसा-व्रत' लिया!

× × × × ×

स्मृति-गान

हुआ पार्क 'आज़ाद-पार्क' यह आज से
क्योंकि यहीं पर, वीर समर में सो गये !
तरु में अंकित शूर, तुम्हारा शौर्य है.
नश्वर है वह, किन्तु, अनश्वर कीर्त्ति है,
बन्धु. तुम्हारी माता की बलिदान की।
तरुण, तुम्हारी मूर्त्ति बसी है देश के
तन में, मन में, रोम रोम में, तब तुम्हें
कैसे भूलेगा कृतज्ञ भारत सदा
पूजेगा आज़ाद तुम्हें आज़ाद हो।

× × × × ×

शहीद आज़ाद

अब क्या है, देखा है बहुधा राह पर
जाते हैं जो पथिक हृदय में सोच कुछ
रुक जाते हैं, आते हैं, इस पार्क में
बड़ी देर तक खड़े एक तरु के तले
हेरा करते उस तरु को औ' भूमि को;
फिर, तरु के नीचे की रज ले हाथ में
मौन स्वरों में पढ़ते कुछ संकल्प हैं,
और लगा कर यह रज सिर में, वक्ष में,
हो करके उद्विग्न चले जाते पुनः।

'राष्ट्रिय आत्मा'

शहीदे वतन

१. शहीदे वतन, ऐ माँ के दुलारे बेटे,
आज आराम से आग़ोशे लहद में लेटे,
जब तलक जान रही, हौसला मरदाना था,
जान देने का भी इक ढङ्ग दिलेराना था,
आज मर कर भी तू ज़िन्दा है दिलों में सबके,
उम्र जावेद मिली राहे वफ़ा में मिटके।
मादरे हिन्द की ज़िंदाँ से रिहाई हो जाय।
हर तरह अपने फ़रायज़ की अदाई हो जाय।
ज़ुल्म का नाम मिटे अहले वतन शाद रहें,
बुलबुलें फिर चमने दहर में आबाद रहें।

शहीद आज़ाद

बस, इसी धुन में भटकता फिरा वीरानों में,
क़ौम का एक ही दीवाना था दीवानों में,
देगई दर्स फ़ना हमको शहादत तेरी,
मिस्ल अपना नहीं रखती है इबादत तेरी।
फूल तुरबत पै तेरी चंद पड़े थे बिखरे,
ज़ख़्म दिल देख कर उनको हुए जाते थे हरे।
नौहा करती हुई वाँ बादे सबा आती थी,
ग़ैब से कान में सबके यह सदा आती थी,
'मादरे हिन्द हो आज़ाद' तुम आज़ाद बनो,
हक़ तुम्हारा है कि आज़ाद हो आज़ाद बनो।'

एक युवक

प्रकाशक

शारदा-सदन,

प्रयाग।

५०००

—:#:—

मुद्रक

रामअधार यादव,

यूनियन जाब प्रेस, कटरा, इलाहाबाद।

मूल्य -)

हिन्दी की नई और उपयोगी पुस्तकें

१—नारी जीवन १)

२—सरदार वल्लभभाई पटेल (सचित्र) ॥=)

३—देवी वीरा

(रूस की प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महिला

वीरा फिगनर की आत्म-कथा सचित्र)

४—गांधी का जादू

५—आज़ादी की तरंगें –)

६—अमर शहीद यतीन्द्र (सचित्र) ॥–

७—वर्त्तमान रूस १॥

शारदा-सदन,

कटरा, प्रयाग।